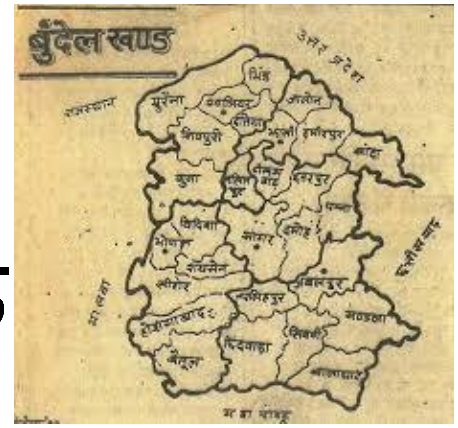
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड
का संक्षिप्त वर्णन





भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों
Geological Structure & Type of Plateau, Hills

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों **Geological Structure & Type of Plateau, Hills**

अध्याय शीर्षक	भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्म
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Geological Structure & Type of Plateau, Hills**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों **Geological Structure & Type of Plateau, Hills**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों **Geological Structure & Type of Plateau, Hills**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों का संक्षिप्त वर्णन

भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों **Geological Structure & Type of Plateau, Hills**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा चित्रकूट पठार

यह पठार बान्दा मैदान के दक्षिण में विन्ध्यन श्रेणी के समानान्तर फैला हुआ है। यह स्थानीय रुप से पाठा के नाम से जाना जाता है.और दो या तीन कगारों के रुप में मैदान से अलग होता है। यह अत्यधिक कटावयुक्त उच्चभूमि है। आकर्षक दृश्यावली वाला यह पठारी क्षेत्र प्रत्येक हिन्दू.के लिये चित्रकूट धाम पर पवित्र मन्दिरों की उपस्थिति के कारण अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

जल प्रवाह प्रणाली

किसी भी क्षेत्र की प्रवाह प्रणली उस क्षेत्र में जल–तन्त्र की प्राकृतिक व्यवस्था को प्रदर्शित करती है। किसी क्षेत्र का प्रवाह–तंत्र कुछ तत्वों जैसे– उस क्षेत्र के ढाल, चट्टानों की कठोरता में असमानता, संरचनात्मक नियन्त्रण तथा अपवाह बेसन के नवीन भूगर्भिक एवम् भू–आकृतिक इतिहास के द्वारा प्रभावित रहता है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में भूमि का ढाल दक्षिण–पश्चिम से उत्तरपूर्व की ओर है तथा सभी नदियां ढाल के अनुरुप बहती हैं। नदियों का स्वभाव अनुवर्ती है और वे जालीनुमा अपवाह तंत्र का निर्माण करती हैं। बुन्देलखण्ड क्षेत्र यमुना क्रम से ही अपवाहित है। बेतवा केन, बांगे, धसान आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियां हैं। ये सभी नदियां विन्ध्य पर्वतों से निकलती है तथा उत्तर एवम् उत्तर–पूर्व को बहती हैं।

जिले में बड़े पैमाने पर अनियमित ऊपरी भूमि ~~होती~~ है, जिसमें दलदली तराई के साथ चट्टान के बहिर्वाह होते हैं, जो अक्सर बारिश के मौसम में पानी के नीचे होते हैं। बाघेन नदी जिले को दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर पार करती है। नदी के दाईं ओर स्थित पथ कई छोटी नदियों और नालों से घिरा हुआ है, लेकिन बाईं ओर यह एक सपाट विस्तार है, अधिकांश भाग के लिए, मार और काबर मिट्टी का, केन और यमुना नदियों के किनारे खड्डों में परिवर्तित हो गया और कुछ हद तक, बाघेन नदी और गरारा नाला। पूर्व में टेबललैंड की अपरिवर्तनीय स्तर रेखा दक्षिण–पश्चिम में पाई जाने वाली पहाड़ियों के अधिक सुरम्य समूहों की तुलना में एक अनाकर्षक पृष्ठभूमि बनाती है, लेकिन जिले के दक्षिणी भाग में बिखरे हुए मेटामॉर्फिक आउटक्रॉप्स प्रचुर मात्रा में हैं, जो परिदृश्य को बदलते हैं और आम तौर पर आंखों को मनभावन तस्वीर देते हैं। जिले के उत्तर–पश्चिमी हिस्से से उनकी अनुपस्थिति काली कपास मिट्टी के नीरस हिस्सों को राहत देने के लिए ढाक जंगल और लहरदार खड्डों के कुछ पैच छोड़ देती है।

जिले का सामान्य ढलान दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व तक है यह बाघेन के पाठ्यक्रम द्वारा बहुत स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। नदी के बाएं किनारे के साथ नोहरी में समुद्र तल से 143.25मीटर से उत्तर–पूर्व में कामसा में 109. 82 मीटर तक एक कोमल ढलान है। गिरवा के दक्षिण में करताल के पास दर्ज किया गया जलस्तर समुद्र तल से 146. 6 मीटर ऊपर 141.72 मीटर तक गिर गया है। कुछ 32 किमी उत्तर में पंगर में गिरवां में 135.63 मीटर, बान्दा में 126. 18 मीटर, अतरहाट में 118 मीटर और यमुना पर चिल्ला में 102.72 मीटर तक है। जहां, हालांकि, स्तर आसपास के इलाके से कुछ कम है। बाघेन नदी के दाईं ओर तहसील नरैनी में रसिन में दर्ज ऊंचाई समुद्र तल से 146.91 मीटर है, ओरान में तहसील बबेरू में लगभग 25 किमी उत्तर पूर्व में, यह 122.53 मीटर है, और यमुना पर औगासी में यह 117.34 मीटर है। आगे पूर्व में फिर से कर्वी 121.92 मीटर, राजापुर 103.63 मीटर और मऊ समुद्र तल से 100.58 मीटर ऊपर स्थित है। तहसील बान्दा का ट्रांस–केन भाग सीआईएस–केसीएन भाग से अधिक ऊंचा है, और यह स्तर धीरे–धीरे केन पर भूरेंडी के पास समुद्र तल से 116.42 मीटर से बढ़कर चरम पश्चिम में कबराई से हमीरपुर तक सड़क के साथ 143. 25 मीटर तक बढ़ जाता है।

जिला दो स्पष्ट रूप से परिभाषित भागों में आता है। एक मऊ और कर्वी तहसीलों के दक्षिण में विन्ध्य पठार पर स्थित पाठा नामक ऊपरी भूमि है और दूसरी जलोढ़ की तराई है।

अपलैंड या पाठा –

इसमें तहसील, कर्वी और मऊ के गाँव शामिल हैं, जो दक्षिण में स्थित हैं और विन्ध्य पहाड़ियों की पहली श्रृंखला के हैं, और जिले के कुल क्षेत्रफल का लगभग दसवां हिस्सा शामिल हैं। मिट्टी पूरी तरह से विघटित बलुआ पत्थर चट्टान के एक उप–स्तर पर निर्भर है, और कभी भी बहुत गहरी नहीं होती है। जिले की दक्षिणी सीमा आमतौर पर कला के साथ चलती है, जहां से कई धाराएं बहती हैं, जो सभी तरफ सतह की मिट्टी को छानती हैं। वह पथ बड़े पैमाने पर जंगलों से आच्छादित है और विरल आबादी वाला है। खेती की भूमि आमतौर पर बस्तियों के पड़ोस में मौजूद होती है, जहां खाद का थोड़ा सा भी उपयोग खेती को लाभदायक बना देता है। पानी बहुत दुर्लभ है, और

जब तक इसे टैन्कों में संरक्षित नहीं किया जाता है, तब तक निवासियों को अक्सर अपनी आपूर्ति के लिए लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है। जंगलों और झाड़ीदार जंगलों के बाहर घास से ढका एक बड़ा क्षेत्र है। कभी–कभी, अरी के नीचे और पहाड़ियों के बीच, घाटियाँ पाई जाती हैं जिनमें वनस्पति और पेड़ों की वृद्धि ऊपर की तुलना में बहुत अधिक होती है, लेकिन किसी भी स्थान पर मिट्टी इतनी गहरी नहीं होती है कि बड़े परिधि के पेड़ों का समर्थन कर सके, जबकि खेती वाले इलाकों में, खाद के बिना, मिट्टी केवल कोदो के बाद तिल का उत्पादन करती है, और फिर उसे फिर से भरने के लिए परती छोड़ दिया जाता है। ट्रैक्ट की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति इसकी घास और इसका ईंधन है, दोनों को बड़ी मात्रा में इलाहाबाद में निर्यात किया जाता है, और पूर्व विशेष रूप से सूखे के वर्षों में चराई के उद्देश्यों के लिए मूल्यवान है।

तराई–

जिले के तराई क्षेत्रों को आगे तीन ट्रैक्ट में विभाजित किया जा सकता है–
बाघेन के पूर्व में,
बाघेन और केन के बीच और
केन के पश्चिम में।

पहला, बाघेन नदी और तहसील मऊ की पूर्वी सीमा के बीच स्थित है, जिसमें तहसील मऊ और कर्वी के तराई भाग और तहसील नारायणी के दक्षिण–पूर्वी भाग शामिल हैं। ट्रैक्ट की सामान्य विशेषता कई गहरी चौनल वाली धाराओं द्वारा गठित संकीर्ण रिआब का एक उत्तराधिकार है जो पहाड़ियों के जल निकासी को यमुना तक और आगे पश्चिम में बाघेन तक ले जाती है। प्रत्येक दोआब में सामान्यतः बुन्देलखन्ड की मिट्टी की एक कॉम्पेफ क्रिया होती है। धाराओं के बीच मार या काबर का एक केंद्रीय पठार है। जैसे ही यह दोनों तरफ नीचे की ओर ढलान करता है, यह मार या काबर और अंततः राकर में बदल जाता है। इस पथ में मुख्य धारा पैसुनी है, जो बघेन के साथ–साथ यमुना के साथ, कटाव क्रिया के कारण भद्दे खड्डों से घिरी हुई है। कुछ गांवों में ई अमुना ने कुछ निष्पक्ष जलोढ़ मिट्टी का गठन किया है। पैसुनी और केन यमुना वीसी के साथ अपने जंक्शनों के पास घुमावदार हैं। नीची भूमि के बीच, जब भी यमुना उठती है, तो वे बाढ़ आ जाती है, जिससे उनके आउटलेट अवरुद्ध हो जाते हैं। पूरा इलाका अनिवार्य रूप से एक असमान है, जिसमें से सतह की मिट्टी, सिवाय इसके कि जहां तटबंधों द्वारा इसे रखा गया है, लगातार धोया जा रहा है।

दूसरी तराई जिसे केन–बाघेन पथ के रूप में जाना जाता है, जो बाघेन नदी के बाईं ओर स्थित है, में नरैनी का थोक, पूरा बबेरू और बान्दा तहसील के सभी सीआईएस केन भाग शामिल हैं। यह आकार में लगभग त्रिकोणीय है, और खड्डों द्वारा नदी के किनारे के साथ एक धीरे–धीरे ढलान वाला मैदान है। दक्षिणी भाग, पनगारा से अतर्रा बुजुर्ग होते हुए तहसील बबेरू में जामुन तक पहुँचता है, जिसमें अधिकांश भाग काबर या मिश्रित काबर और पडुआ मिट्टी के लिए होता है। उत्तर–पश्चिम में यह आम तौर पर काबर और फिर मार द्वारा सफल होता है। बान्दा शहर के उत्तर में मार के स्तर के विस्तार में सबसे अच्छी मिट्टी पाई जाती है। फतेहपुर की सड़क के दोनों ओर बान्दा के उत्तरी भाग में फैलते हुए, यह धीरे–धीरे यमुना पर जौहरपुर गांव में समाप्त होने तक गुणवत्ता में बिगड़ती है, और पूर्व और पश्चिम में हल्की मिट्टी में गिर जाती है क्योंकि यह उसराहा या गरारा नाला और केन नदी के पास पहुंचती है। उसराहा जो पथ में सबसे महत्वपूर्ण जल निकासी चैनल है, ने पूर्व की काली मिट्टी को अलग कर दिया है। उस तिमाही में मार के तीन काफी व्यापक पैच पाए जाते हैं। इनमें से एक तहसील बबेरू में मुरवाल के पास स्थित है और दक्षिण में बिसन्डा बुजुर्ग के बड़े गाँव तक फैला हुआ है। दूसरा बबेरू के उत्तर में एक खोखले में पड़ी महान उर्वरता का एक छोटा सा अलग टुकड़ा है और तीसरा उस तहसील के पूर्व में एक अनियमित स्ट्रगलिंग पथ है और कामासिन से डांडो तक सड़क के किनारे फैला हुआ है, लेकिन आम तौर पर पश्चिम में उसी मिट्टी में से किसी से भी नीच है। मध्यवर्ती मिट्टी आम तौर पर हल्की होती है, जो विभिन्न डिग्री में दिखाती है कि वे किस हद तक परिमार्जन या क्षरण से प्रभावित हुए हैं। तराई का यह पूरा हिस्सा जिले का सबसे मूल्यवान हिस्सा है, और बाघेन के पाठ्यक्रम के लिए अपनी श्रेष्ठता का श्रेय देता है, जिसने दक्षिण पश्चिम से उत्तर–पूर्व तक जिले में बहकर, दक्षिण से सभी जल निकासी को गिरफ्तार कर लिया है, और उस नदी और विन्ध्य स्कार्प के बीच के पथ में पाई जाने वाली कई धाराओं से उत्तर में देश को काट दिया है।

तहसील बान्दा के ट्रांस–केन हिस्से से युक्त तीसरा तराई पथ तहसील के सीआइ एस–केन हिस्से की तुलना में आम तौर पर उच्च स्तर पर स्थित है। इसका ढाल पश्चिम से पूर्व और दक्षिण से उत्तर की ओर है। मिट्टी आम तौर पर लहरदार होती है और धाराओं द्वारा कटी हुई होती है जो दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व तक केन में बहती हैं, जिनमें से प्रमुख चंद्रावल हैं। शियार्न, बिचुई और गवाइन। मटौन्ध के पश्चिम में स्थित हिस्सा अधिक समतल है और इसमें कुछ अच्छी काली मिट्टी है, लेकिन पूरा देश का एक अनिश्चित पथ है, जो भारी सूखा और पानी से भरा हुआ है।

भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों **Geological Structure & Type of Plateau, Hills**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

उत्तरी भाग में दक्षिण में एक अत्यधिक टूटा हुआ खड्ड पथ है, जो चंद्रावल नदी से घिरा हुआ है, और उत्तर में पडुआ का एक उच्च रिज है, जो पूर्व में सिंधन कलां और उत्तर में गरोला और अन्य स्थानों पर डुबकी लगाता है। यमुना के किनारे के गांवों में आम तौर पर अच्छी जलोढ़ मिट्टी होती है। दक्षिणी भाग में बड़े पैमाने पर खड्ड होते हैं और इसमें थोड़ी अच्छी मिट्टी होती है, जिसमें तुरी या केन के पुराने बिस्तर के अपवाद होते हैं। श्दूसरी ओर उत्तर में इलाका तहसील का सबसे अच्छा आबादी वाला और खेती वाला हिस्सा है, और लंबे समय से जिले के अधिक संपन्न हिस्सों में से एक रहा है। काली मिट्टी भी पाई जाती है, लेकिन क्षेत्र का बड़ा हिस्सा परुआ है, और इसका अधिकांश भाग दोआब के दोमट के करीब पहुंचता है।

पहाड़ियाँ—

जिले की पहाड़ियों में विन्ध्य पठार का हिस्सा शामिल है जो तहसील मऊ और कर्वी के चरम दक्षिणी भागों में स्थित है। कई अलग—थलग पहाड़ियाँ, जो मुख्य निकाय की चौकी की तरह दिखाई देती हैं, मुख्य सीमा के पास पहुँचते ही तेजी से बढ़ती जाती हैं। विन्ध्य का उत्तरी किनारा जिसे बिंधाचल रेंज के रूप में जाना जाता है, तहसील मऊ के चरम पूर्व में यमुना के पास शुरू होता है। यह यमुना से दक्षिण—पश्चिम दिशा में तहसील मऊ और कर्वी के माध्यम से घटती है, धीरे—धीरे ऊंचाई में बढ़ती है, लेकिन कहीं भी समुद्र तल से 450 मीटर से अधिक ऊंचाई प्राप्त नहीं करती है, और तहसील नारायणी के दक्षिण—पूर्वी भाग में गोधरामपुर में फिर से प्रकट होने के लिए अनसुइया की पवित्र पहाड़ी के पास जिले को छोड़ देती है। इस बिंदु से पश्चिम की ओर कालिंजर तक पहाड़ियाँ जिले की सीमा बनाती हैं। तहसील कर्वी के दक्षिण में, विन्ध्य की दूसरी या पन्ना श्रेणी को छुआ जाता है, और यहाँ औसत ऊंचाई समुद्र तल से लगभग 250 मीटर ऊपर है— विन्ध्याचल श्रेणी में कैमूर बलुआ पत्थर हैं, जबकि पन्ना श्रेणी में ऊपरी रेवा बलुआ पत्थर हैं। ये दोनों बलुआ पत्थर बड़ी मोटाई की विशाल चट्टानें हैं। निचला रेवा समूह, कैमूर और ऊपरी रेवा समूह के बीच एक मध्यवर्ती, अनुदैर्ध्य घाटी के सबसे बड़े हिस्से पर कब्जा कर लेता है जो दो श्रेणियों को अलग करता है और इसमें दो शेली उपखंड होते हैं, निचले को पन्ना शैल के रूप में जाना जाता है और ऊपरी को झिरी शैल के रूप में जाना जाता है। मध्यवर्ती बलुआ पत्थर बैंक को निचले रेवा बलुआ पत्थर के रूप में जाना जाता है। गनीस जो पूरे को रेखांकित करता है, केवल विन्ध्य बहिर्वाह के तत्काल पड़ोस में उभरी हुई जमीन में और बान्दा तक केन नदी के पड़ोस में भी दिखाई देता है। कभी—कभी कालिंजर पहाड़ी पर, कैमूर बलुआ पत्थर सीधे आर्कियन गनीस पर टिका हुआ है, लेकिन कहीं और, तरौहन के पास, बलुआ पत्थरों, शैलों और चूना पत्थरों का एक समूह है, जिसे निचली विन्ध्य श्रृंखला के रूप में जाना जाता है। बाहरी चट्टानी पहाड़ियाँ आम तौर पर गनीस और साइनाइट की होती हैं। कुछ मौसम से बड़े द्रव्यमान में विघटित हो गए हैं, और आंखों को बोल्डर की एक भ्रमित शंकु पेश करते हैं। दूसरों को पेड़ों के साथ मोटे आवरण पहने हैं। कई, जैसे गोंडा और रसिन की पहाड़ियाँ, मौसम से गोल हो गई हैं और एक निश्चित मात्रा में सतह की मिट्टी से ढकी हुई हैं, जो अवरुद्ध जंगल का समर्थन करती हैं; जबकि अन्य केवल नंगे पहाड़ी हैं। अधिकांश का कोई नाम उन गांवों से अलग नहीं है जिनमें वे खड़े हैं, लेकिन कई मामलों में यह संभव है कि गांवों ने पहाड़ियों से अपने नाम प्राप्त किए हों। पहाड़ से पहाड़ी के सामान्य गाँव के नाम के अलावा, हमें मेंडी जैसे नाम मिलते हैं, जिसका अर्थ है पहाड़ियों की एक पंक्ति या सिएरा और भोटी या भोटा जो छोटी निचली पहाड़ियों के लिए सामान्य शब्द हैं। जिले की इन पहाड़ियों में सबसे उत्तर बबेरू के पवैया गाँव में स्थित है। कालिंजर और मारफा के अलावा, जो मुख्य पठार के अलग—अलग हिस्से हैं, उनमें से सबसे प्रसिद्ध बान्दा में बामदेव या बामेसर पहाड़ी, सिहोंडा में खत्री पहार, रसिन में पहाड़ी और चित्रकूट पहाड़ी हैं।

तहसील में बहुत सारे बिखरे हुए चट्टानी पहाड़ियां हैं। वे, केन नदी के पार, यह चट्टानी पहाड़िया बहुतायत में पाई जाती हैं। मुख्यतया व विशेष रूप से दक्षिण की तरफ मटौन्ध, बरबई, बहिन्गा और खड्डी में बहुतायत से हैं। उत्तर की तरफ़ बढ़ने पर यह एक निश्चित पर बढ़ते अंतराल पर मिलते हैं। अढ़ाईपुरवा जो एक छोटा गांव है, मौदहा सीमांत पर स्थित है, के आगे तक छोटे—छोटे बहुत छोटी पहाड़िया मिलती है। केन नदी के पूर्व की तरह बान्दा के आसपास में पहाड़ी नहीं है। बान्दा और केन के बीच एक विशिष्ट और सुस्पष्ट पहाड़ी है।

भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों **Geological Structure & Type of Plateau, Hills**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

संन्दर्भ सौजन्य साभार

थ्नसस जमगज व ि ऋळंमजजममत व ि्पदकपं न्जजंत च्तंकमीए क्पेजतपबज ठंदकंऋ ठन्छक्म्स् ज्वचवहतंचील च21
2 2015ण्268914ण्ठनदकमसींदक.ड्डीमजतं रंदेंदीलं जंजीं ींकलं ेंदेंकींद
भ्पससे ध्चींतप   जचेरूध्ध्ंतबीपअमण्वतहध्ेजतमंउध्कसपण्बेसण्2889ध्2889ऋकरअनण्जगज

भौमिकीय संरचना, पाठा, पहाड़ के किस्मों   Geological Structure & Type of Plateau, Hills